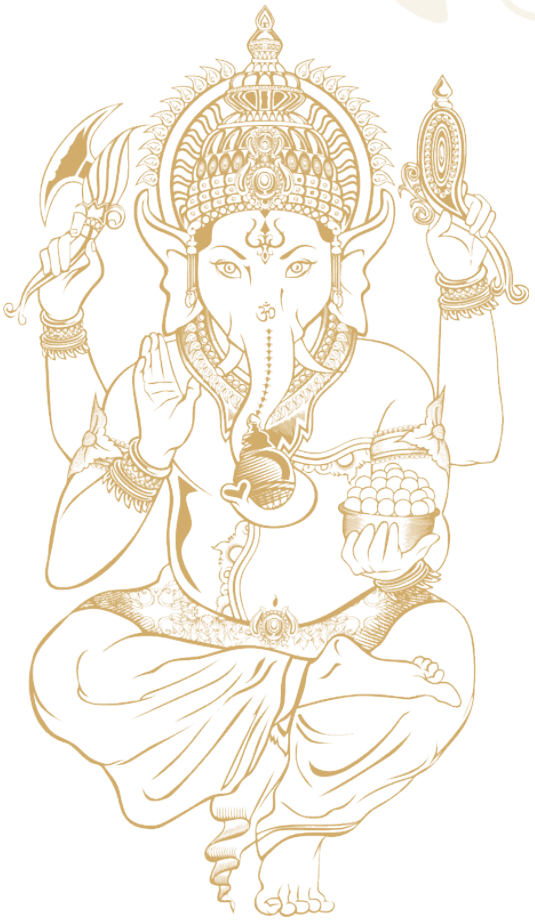

Mr. Ankit

Ms. Mamta

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121560703

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
05/03/1995	जन्म तिथि	20/07/2004
रविवार	दिन	मंगलवार
घंटे 10:00:00	जन्म समय	20:30:00 घंटे
घटी 08:31:08	जन्म समय(घटी)	37:45:07 घटी
India	देश	India
Chamoli	स्थान	Chamoli
30:22:00 उत्तर	अक्षांश	30:22:00 उत्तर
79:19:00 पूर्व	रेखांश	79:19:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:12:44	स्थानिक संस्कार	-00:12:44 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:35:32	सूर्योदय	05:23:57
18:13:39	सूर्यास्त	19:13:49
23:47:34	चित्रपक्षीय अयनांश	23:55:05

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
केतु 4वर्ष 10मा 25दि		29:11:56	मेष	लग्न	मक	28:17:50	केतु 1वर्ष 9मा 27दि	
चन्द्र		20:20:24	कुंभ	सूर्य	कर्क	04:17:53	शुक्र	
28/01/2026		03:59:43	मेष	चंद्र	सिंह	09:51:14	19/05/2006	
29/01/2036		21:48:28	कर्क व	मंगल	कर्क	22:56:20	19/05/2026	
चन्द्र	28/11/2026	23:37:03	मक	बुध	सिंह	00:28:24	शुक्र	17/09/2009
मंगल	30/06/2027	20:26:53	वृश्चि	गुरु	सिंह	22:34:39	सूर्य	17/09/2010
राहु	28/12/2028	08:51:59	मक	शुक्र	वृष	22:41:09	चन्द्र	18/05/2012
गुरु	29/04/2030	21:06:39	कुंभ	शनि	मिथु	24:27:29	मंगल	18/07/2013
शनि	29/11/2031	12:56:01	तुला व	राहु व	मेष	13:24:34	राहु	18/07/2016
बुध	29/04/2033	12:56:01	मेष व	केतु व	तुला	13:24:34	गुरु	19/03/2019
केतु	28/11/2033	05:11:31	मक	हर्ष व	कुंभ	12:16:21	शनि	19/05/2022
शुक्र	30/07/2035	00:59:16	मक	नेप व	मक	20:31:02	बुध	18/03/2025
सूर्य	29/01/2036	06:48:43	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	26:02:48	केतु	19/05/2026

लग्न-चलित

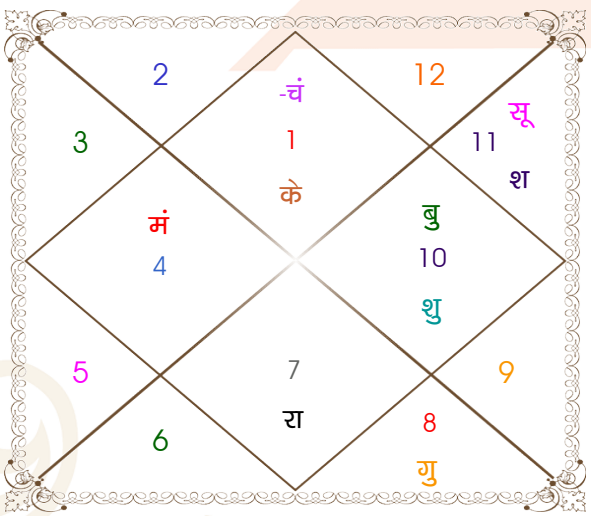

लग्न-चलित

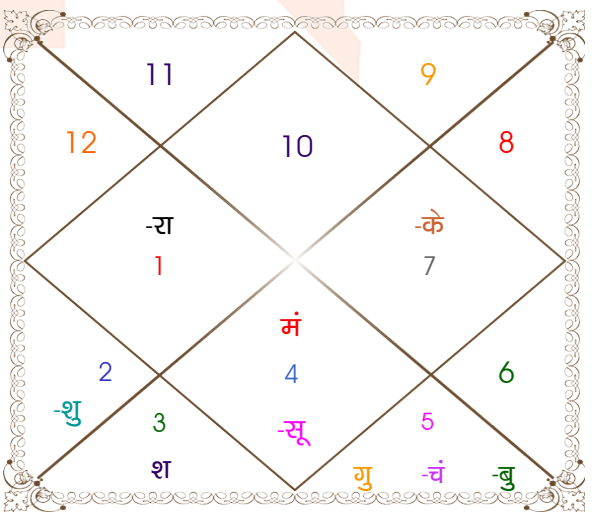

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	वनचर	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	अश्व	मूषक	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	सूर्य	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	राक्षस	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	मेष	सिंह	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	20.00		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

डतण ।दापज का वर्ग सिंह है तथा डेण डंउजं का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण ।दापज और डेण डंउजं का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण ।दापज मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

चतुः सप्तमे भौमो मेषकर्कटे निग्रहः।
कुजदोषो न विद्यते।।

अर्थात् चतुर्थ तथा सप्तम भाव में यदि मेष या कर्क का मंगल हो तो कुजदोष समाप्त हो जाता है। क्योंकि मंगल डतण ।दापज कि कुण्डली में चतुर्थ भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डतण ।दापज कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेण डंउजं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

चतुः सप्तमे भौमो मेषकर्कटे निग्रहः।
कुजदोषो न विद्यते।।

अर्थात् चतुर्थ तथा सप्तम भाव में यदि मेष या कर्क का मंगल हो तो कुजदोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल डेण् डंउजं कि कुण्डली में सप्तम् भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डेण् डंउजं कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु डेण् डंउजं कि कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डेण् डंउजं कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु डतण् ।दापज कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डतप् ।दापज कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतप् ।दापज तथा डेप् डंउजं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।